सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

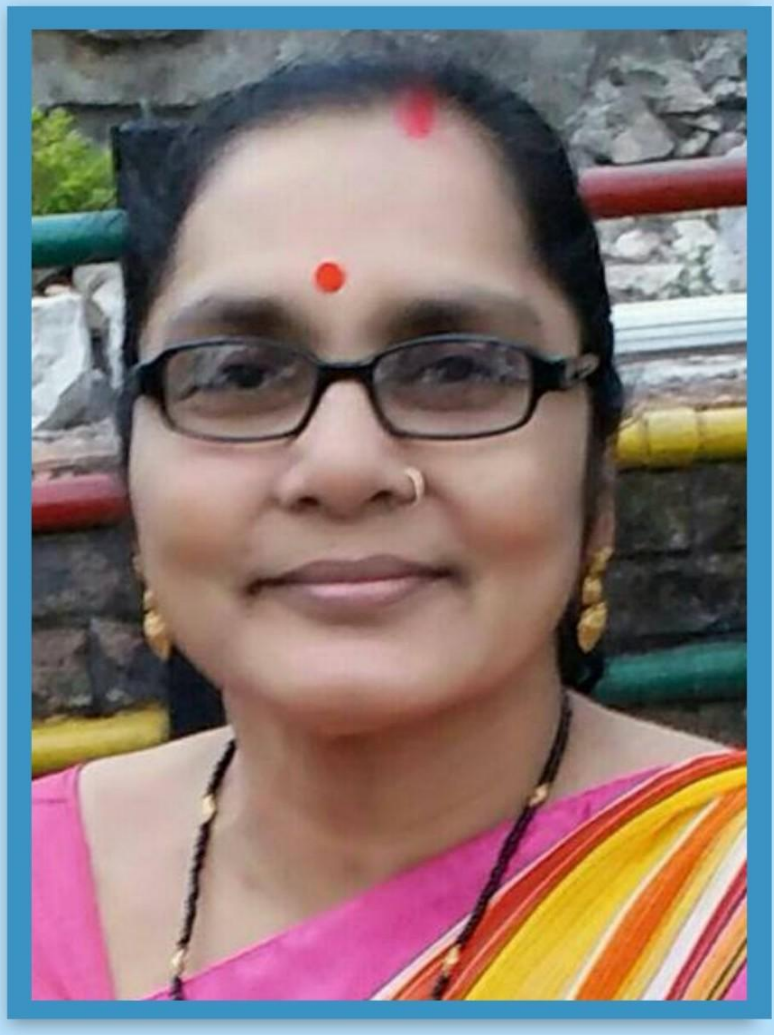

केन्द्रीय रचनाकार

● सुधा शर्मा

सृजक-सृजन-समीक्षा

सुधा शर्मा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

सुधा शर्मा का परिचय

नाम- सुधा शर्मा

पति- श्री शरद शर्मा

पिता-स्व, डा.जवाहरलाल तिवारी

माता- स्व,सुमन तिवारी

जन्मतिथि-19-9-59

पता-ब्राह्मण पारा राजिम

जिला: गरियाबंद, छत्तीसगढ

मोबाइल नं-9993048495

प्रकाशन

" महानदी "- खंडकाव्य (हिंदी) पराग प्रकाशन-नई दिल्ली । 2016 ।

"चंदन सुधि पुरवा कर डारेंव "-खंडकाव्य जीविका प्रकाशन-नई दिल्ली ।2017।

"जिनगी के बियारा म" काव्य संग्रह (छत्तीसगढ़ी) वैभव प्रकाशन रायपुर छत्तीसगढ़ ।2016।

"पुरवा कहती है"--ओकाव्य संग्रह (हिंदी) वैभव प्रकाशन रायपुर छत्तीसगढ़। 2010।

कहानी संग्रह (छत्तीसगढ़ी) प्रकाशन में वअनेक पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

उपलब्धियाँ-

बेटी बचाओ मंच रायपुर द्वारा स्थापना दिवस पर कविश्री सम्मान से सम्मानित । 2014 प्रकाशन

चेतना साहित्य कला परिषद् छत्तीसगढ़ द्वारा सम्मानित 2014।

छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा 2013से 2018तक चर्चा गोष्ठी में सम्मानित ।

न्यू ऋतंभरा साहित्य मंच कुम्हारी द्वारा तुलसी दास सम्मान एवं साहित्य

अलंकरण से सम्मानित ।2012।
छत्तीसगढ़ अस्मिता संघ रायपुर द्वारा सम्मानित 2011।
छत्तीसगढ़ शोध संस्थान रायपुर द्वारा सम्मानित 2011।
श्री शतचंडी महायज्ञ विराट संत समागम में प्रतिभा सम्मान से सम्मानित 2011।
वक्ता मंच रायपुर द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय छत्तीसगढ़ी काव्य लेखन प्रतियोगिता में विजेता व सम्मानित 2010।
वक्ता मंच रायपुर द्वारा ही आयोजित प्रदेश स्तरीय काव्य प्रतियोगिता 2010में सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कवि रत्न का पुरस्कार एवं इंक्यावन हजार रूपयों की नगद राशि से पुरस्कृत व सम्मानित।
भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा भीम चेतना अवार्ड 2009 से सम्मानित ।
छत्तीसगढ़ राज्य चिकित्सा संघ की ओर से सम्मानित 2009।
संगम साहित्य व सांस्कृतिक समिति मगरलोड द्वारा आयोजित राज्यस्तरीय लोककथा प्रतियोगिता में पुरस्कृत व सम्मानित 2009।
अखिल भारतीय कवयित्री सम्मेलन के छठवां अधिवेशन रायपुर छत्तीसगढ़ में आयोजितकार्यक्रम में सम्मानित 2005।
छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग द्वारा सम्मानित 2005।
संगम साहित्य परिषद नयापारा द्वारा आयोजित काव्य लेखन प्रतियोगिता में पुरस्कृत व सम्मानित 2005।
छत्तीसगढ़ साहित्यिक सांस्कृतिक समिति कोटा बिलासपुर द्वारा भोजली प्रतियोगिता व कवि सम्मेलन में सम्मानित 2017।
साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था वक्ता मंच रायपुर द्वारा रचनाकार सम्मान 2018।
विप्रकुल महिला मंडल रायपुर द्वारा आयोजित कवयित्री सम्मेलन में सम्मानित और अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित व पुरस्कृत।

आत्मकथ्य- माता पिता की अकेली संतान होने की वजह से अक्सर अकेलापन महसूस होता था मेरे बाबूजी मुझे कहा करते "बेटा किताब सबसे बेहतरीन दोस्त

होता है"
और छुट्टियों में वे हमेशा मुझे साहित्यिक किताबें लाकर दिया करते मेरी माँ भी किताबों में रूचि रखती थी ।
गांव में पहले लालटेन हुआ करते तो रोज हमारे चपरासी जो बिस्तर लगाया करता हम लोगों के बिस्तरों के पास एक-एक स्टूल और उस पर लालटेन रख कर जाना उसकी ड्यूटी में शामिल होता हम अपनी-अपनी मनपसंद किताबें पढा करते ।
इस प्रकार बचपन की वह आदत या कहूँ संस्कार आज भी मुझमें रचा बसा है।संयोग से मेरे पति भी साहित्यकार हैं सो हम दोनो की ही दिनचर्या में किताबों का अध्ययन शामिल हैं ।
किताबों के प्रति रूझान और कवि हृदय पिता जो अक्सर कविताएँ लिखा करते थे इन सबका प्रभाव मुझ पर ऐसा हुआ कि क़लम अनायास हाथों में कब आ गई पता न चला ।
कालेज में सहेलियों की प्रशंसाओं से लगता कि मुझमें ऐसा कुछ तो है जिसे अगर खाद पानी दिया जाए तो वह उभर कर सामने आ सकता है।
विवाह के पश्चात भी मेरा स्वांत:सुखाय लिखना होता रहा मेरे पतिदेव ने प्रोत्साहित किया और फिर एक अवसर ऐसा आया कि जिला स्तरीय काव्य प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत हुई फिर क्या था!कलम प्रवाहित होने लगी और विभिन्न संस्थाओं मंचों में माँ शारदे की कृपा से सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हुआ। और मेरी रचनाएँ सिर्फ मेरी न होकर आप सब गुणी जनों के बीच आ गई।
मैंसोचती हूँ भावों को शब्दों में बाँधना आसान नहीं है साहित्य की विधाओं में बंधना भी आसान नहीं है बस मन की बातें ही रखने की कोशिश की है
एक मजेदार बात बताऊँ
मुझे अपनी किसी भी रचना का शीर्षक देना नहीं आता बस भावनाओं को परसती हूँ।

सुधा शर्मा

"सृजक का सृजन"

मन को नेह गगन करूँगी

आकांक्षाओं के स्वप्न महल में,
तुम सपनों की सेज सजाना ।
मैं आस्थाओं के मंदिर में,
भावों का अर्चन करूँगी।

अरमानों केपाँव न थकते
मन को कराते नित -नित नर्तन
और समय का महाकाव्य भी
बन जाता है यूँ ही भजन ।
तुम गगन से लाकर तारे ,
वक्त के सीने में सजाना।
मैं उज्जवल दिये की लौ बन ,
कल्मष सारे दहन करूँगी ।

मन- प्राणों का, नित -नित बंधन
सांसों का अभिसार कहाँ।
तेरा-मेरा एक सदैव से,
विलग- विलग संसार कहाँ ।
तुम साँसों के सरगम में ,
चाहे कोई भी गीत बसाना ।
मैं धड़कन की हर ताल में ,
गीतों का सृजन करूँगी।

संवेदनाओं की गगरी फूटी ,
भावों के मधुरस हैं छलके ।
फिर बावरा हुआ है मन,
सुध- बुध हैं ,बिखरे- बिखरे ।
तुम चेतना के स्तर पर,
गगन की ऊँचाई पाना ।
मैं भावों की दीपशिखा से ,
मन को नेह गगन करूँगी।

पथ के सारे कंटकों को,
हँसकर गले लगाया है ।
सींच -सींच हृदय रूधिर से ,
गुलशन को महकाया है।
तुम तुलसी की बिरवा बन,
जन- जन के मन में छा जाना।
मूल की मृदा- मृदा बनकर,
मैं अर्पित, जीवन सकल करूँगी।

कपसीले बादल

अभिलाषित उर नयनों को ,
करते तृप्त बनकर सागर।
ललित मनोहर रूप धर आते ,
नभ पर छाते घनेरे- बादल।

जानें कहाँ- कहाँ से आते,
निरभ्र नील -गगन में छाते ।
नभ पर विहँसते, झूमते गाते ,
नव -रूप धर नशीले- बादल ।

कभी गरजते, कभी बरसते।
नव नाद भर, बूंद छलकते ।
श्यामल चहुँ दिशी बगरते,
नभ पर सघन, पनीले- बादल।

थम जाता मेघा का नर्तन ,
होता स्निग्ध निर्मल- गगन।
रूई के पहाड़ों सा लगते ,
कपस- कपस कपसीले- बादल ।

रवि गाता जब विदाई गान ,
फैलता नभ पर सुदूर वितान ।
काले, पीले, भूरे -रंगों में ,
नृत्य करते रंगीले -बादल।

तुमसे ही होता सृष्टि- गान ,
धरा को देते उर्वर प्राण ।
बंजर ,दग्ध, प्यासी -भूमि को ,
रससिक्त करते रसीले- बादल ।

महुआ झरे रस भरे

सखी! हुई फिर हवा बावरी ,
आया वसंत धीरे -धीरे ।
छलकी फिर नेह की गगरी ,
महुआ झरे, रस भरे ।

सहलाती मृदुल -हवा ,
भरती देह में, अलस -पीर।
मन बाँधे, खींच- खींच ,
मन्मथ मारे' तीर- तीर ।

उमंगों की पगडंडी,
स्वप्निल हो निखरे ।
छलकी फिर ।।।।

किरणों का कुंकुम ले आया ,
गुनगुनाता प्रभाकर है ।
पुरइन- पान के झुरमुटों में ,
सज गए सरोवर हैं।

तैरते बतख ,
अंबुज हैं खिले -खिले ।
छलकी फिर ।।।

गेंदिया- गेंदिया, धूप हुई ,
अरूणारी सी साँझ ।
दहके- दहके तन अभिलाषित ,
महकी- महकी साँस ।

यास्मीनी गंध,
फैली महमहे।
छलकी फिर ।।।।

मधुकर, मधु पीने को ब्यग्र ,
अधर हुए ,आज रसीले ।
आम्रकुंज के, पर्ण -पर्ण में,
मदमस्त मंजरी बिखरे ।

खिलखिलाती केशर- क्यारी ,
हैं मकरंद 'झरे- झरे ।
छलकी फिर ।।।।

रात ढलती रही

रात ढलती रही , दिन निकलते रहे,
उजली किरणों का, अब भी इंतजार है।
दर्द पलता रहा, दिल के कोने में कहीं ,
लब पर, ख़ामोशियों का इजहार है।
रात ढलती रही ।।।।।।

जीवन का अर्थ ,इतना सरल तो नहीं ,
कि सूत्र से, सवाल हल हो गया ।
इक कदम ही चले थे, चुपके से हम ,
सारे शहर में ,कोलाहल हो गया ।
संवादों का ,अंतहीन सिलसिला ,
शब्द- बाणों की, भरमार है।
दर्द पलता रहा ।।।

जिंदगी का, भरोसा हम कैसे करें,
वक्त इतना मोहलत तो देता नहीं।
चाँदनी की छटा, बिखरे मावस में कभी,
रात में सूरज तो, निकलता नहीं।
रौशन सितारों पर ,पहरा हुआ ,
नजर आता तो, बस अंधकार है ।
दर्द पलता रहा ।।।

दुनिया के मुखौटों की बातें छोड़ो
हर रिश्ता है पैबंद लगा हुआ
शब्द जाल हो गए जीने के ढंग
जिंदगी अर्थ कोहरा कोहरा हुआ

खुशियाँ दुल्हन सी शर्माती रही
दर्द जिन्दगी का दावेदार है
दर्द पलता रहा ।।।
रात ढलती रही ।।।

कैसे फिर कोई सृजन होगा

घनीभूत पीड़ा की आँधी ,
टीस देती,उमड़- उमड़ कर।
भावों की लहरें टूट जातीं,
चट्टानों से सर टकराकर।
जब तलक न, मन से
मन का आलिंगन होगा।
कैसे फिर कोई सृजन होगा ?

जीवन का इतिहास यही है,
प्रतिपल है अबूझ पहेली।
उलझ- उलझ कर ,रह जाए मन,
राह बताए कौन सहेली।
नवीन -पथ ,कंटक सघन है ,
कैसे तन्हा गमन होगा ?
कैसे फिर ।।।।।

गर्म रेत की दीवारें हैं ,
झुलस रही शब्दों की क्यारी ।
जैसे कोई नवेली -दुल्हन,
सिंदूर- विहीन लगे कुंवारी ।
सपनीली रंगीन- चुनर से ,
सजा न मन -प्रांगण होगा ।
कैसे फिर ।।।।

उंगली थाम पथ पर,
पग -पग मुझे ,चलाती जो ।
विश्वास- दीप ,जला मन में ,
क्यूँकर छल जाती वो ?
आस्था- दीप ,जले न जब तलक
कैसे फिर पथ- रौशन होगा ?
कैसे फिर ।।।।

थक जाते हैं नन्हें कदम ,
मंजिल की है, आस बड़ी।
नैनों के अगाध सिंधु में
अधरों पर है ,प्यास बड़ी।
जब तलक न बूंदों झरता
शब्दों का सावन होगा ।
कैसे फिर ।।।।

निशी- दिवस, पल, पल गूंथे,
सपनों की सृजन -माला।
ले पूजन, दीप- थाल ,
मन-मंदिर में जिसे पुकारा।
जब तलक न, मन का प्रीत
सुरभित ,पावन, चंदन होगा ।
कैसे फिर ।।।।

नववर्ष

सवालों के ,कटघरे में
खड़े हुए हो तुम ।
हठी सा, आतुर द्वार पर
अड़े हुए हो तुम ।

अप्रिहत बरसों -बरस से ,
आते-जाते हो ।
आशाओं के अनेक दीप ,
जलाते- बुझाते हो।

वक्त के चक्रवात में ,
फँसे हुए हो तुम ।
नियति के अचूक -संधान में ,
सधे हुए हो तुम ।

हताहत मानवता रोती
संवेदनहीन हथियारों से
भूख गरीबी मँहगाई
नक्सली अत्याचारों से

चमत्कारों की नई संदूकची ,
क्या धरे हुए हो तुम ?
या प्राचीन रोगों के, सरगम से
भरे हुए हो तुम ।

अब ऐसा ,कोई गीत सुनाना ,
घावों का ,मरहम बन जाए ।
पीड़ितों- निर्दोषों के' आँसू थाम ,
अधरों पर मुस्कान सजाए।

क्या ऐसा कोई, नवीन पथ का ,
विकल्प चुनें हो तुम ?
बोलो,बोलो,,ऐ नववर्ष !
अब क्या गुने हो तुम?

किंकर्तव्यविमूढ़ सा, हुआ है
मानस,
अभिनंदन के, नवल पथ, पर ।
आँसू मिले, या मुस्कान -
करते हैं ,स्वागत ,हँस -हँस कर ।

स्वाभिमान

अभिमान तो करते सब ,
अपने हिन्दुस्तान पर ।
फिर भी क्यूँ खामोश रहते ?
आन बान और शान पर ।

दुश्मन आकर हमको छेड़े ,
जब- तब खूनी होली खेले।
रंग बिखरते ,राजनीति की
सैनिक बस पत्थर झेले
क्यों सो जाता जमीर
शहीदों के बलिदान पर ?

माँ ,बहन, बेटियाँ, बिकती
गली और बाजारों में ।
शर्म नही आती तब क्यों ?
समाज के ठेकेदारों में ।
निशदिन तलवारलटकते,
क्यों निर्भया के प्राण पर?

राणा- शिवा की ,यह धरा
स्वाभिमानों से ,है भरा
क्यों रो रही भारतमाता?
हो रही नित है अधरा ।
प्रश्न क्यों उठ रहे अब ?
संस्कृति के ,गौरव गान पर।

"सृजन की समीक्षा"

1.

आपका परिचय , आत्मकथ्य गौरवान्वित कराता है।आपकी उपलब्धियां साहित्य की अमानत हैं। आपकी साहित्य के प्रति सक्रियता और समर्पण को रेखांकित करती है।

खंड काव्य , आंचलिक काव्य रचना संग्रहनीय हैं।

मन को नेह गगन करूंगी ...आत्म समर्पण का बिम्ब है वहीँ कपसीले बादल प्रकृति का नभ - मंचन का सौंदर्य है। ....महुआ झरे रस भरे - प्रकृति में प्रेम के अवलंबन और उद्दीपन की झांकी है ।..रात ढलती रही ...में जीवन का जुझारूपन का स्पष्ट झलकता है।

कैसे फिर....होगा में - अनुकूलता तलाशता मन सृजन पथ पर है।

नव वर्ष ....में आशाओं के अस्तित्व पर प्रश्न है।

स्वाभिमान कविता राष्ट्र प्रेम का आह्वान करती हुई कविता है।

सभी काव्य रचनाओं में साहित्य की साधना और उससे प्रेम रंग स्पष्ट आलोकित हो रहा है।

आप पर वीणापाणि की इसी तरह कृपा बनी रहे ।

बहुत बहुत **बधाई** के साथ रामनवमी की आत्मीय शुभ कामनाएँ।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

2.

आज की केन्द्रीय रचनाकार सुधा शर्मा जी का स्वागत है...अनेक सम्मान से सम्मानित साहित्य साधिका का परिचय व विरासत में मिली हिन्दी साहित्य प्रेरणा वंदनीय है | क्षेत्रीय बोलीयों और भाषाओं में भी सृजन अदभुत प्रतिभा का दर्शन है |

आपकी रचनाएं

मन को नेह गगन करुंगी

सार्थक शीर्षक के साथ स्वप्न साक्षात्कार सहित सुन्दर शब्दो के चयन का परिणाम है |

कपसीले बादल

नवीन पर्यायवाची शब्दों के साथ उत्कृष्ट रचना

महुआ झरे रस भरे
बहुत सुन्दर रचना
रात ढलती रही
सुन्दर शब्द चयन के साथ खूबसूरत रचना
कैसे फिर कोई सृजन होगा
गंभीर पीढ़ा का स्वर, मुखर शैली और संवाद करता सृजन... बेहद ही सुन्दर और परिपक्व
नववर्ष
सटीक तंज
स्वाभिमान
सही बात...
आवश्यकता है अब अस्त्र संधान की...
सभी रचनाएँ एक से बढ़कर एक है... क्योंकि शब्दों का चयन ही रचना के गंभीर भावों को बिखेर रहा है |
आप उत्तरोत्तर हिन्दी सेवा मे लगे रहें, यही शुभेच्छा है...

डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

3.

सुश्री सुधा शर्मा जी का केंद्रीय रचनाकार के रूप में **अभिनंदन**। प्रभावी आत्मकथ्य। उपलब्धियां भी कम नहीं। पटल पर आपकी सतत उपस्थिति दर्शाती है कि लेखन के प्रति आप कितनी संकल्पित हैं। आज प्रस्तुत विविधवर्णी रचनाएं प्रभावित करती हैं। आप यूं ही निरंतर साहित्य सेवा में रत रहें और अंचल के साथ ही देश कज साहित्यिक कोश की श्रीवृद्धि करती रहें। अनेक शुभकामनाएं।
इस सप्ताह **" सप्ताह का कवि विशेषांक "** की आकर्षण बनी साहित्य की साधिका सुधा शर्मा जी की रचनाओं को पढ़ने का सुअवसर मिला है। अंतरा शब्दशक्ति ऐसे हीरों को खोज कर, पटल पर लाकर उन्हें पढ़ने का अवसर हमें प्रदान कर रहा है यह हम साहित्य के पाठकों का सौभाग्य ही तो कहा जाएगा।

आत्मकथ्य बहुत अपना सा, मन के निकट और अपने से साम्यता लिए लगा। ऐसे ही वातावरण में ऐसे ही साहित्य प्रेमी, संवेदनशील लेखक पिता और भावुक माँ की परवरिश मुझे भी मिली है। इनके बीच पले-बढ़े व्यक्तित्व की स्वामिनी सुधा शर्मा जी की रचनाओं को पढ़ना अपने आप में एक अलग अनुभव है।

साहित्यिक उपलब्धियाँ और सम्मान सुधा जी की साहित्य साधना का परिचय स्वयं ही दे रहे हैं जो उनके साहित्यिक विराट व्यक्तित्व की झाँकी सी हमारे सामने प्रस्तुत करते छोटे हैं।

मन को नेह गगन करूँगी.... गीत की ये पंक्तियाँ..... मैं धड़कन की हर ताल में गीतों का सृजन करूँगी..... आकांक्षाओं को पूरा करने की जैसे दृढ़ता को परिलक्षित करती प्रतीत होती हैं।

कपसीले बदल में.....घनेरे,नशीले,पनीले,रंगीले, रसीले जैसे शब्द बादलों के साथ जुड़ कर रचना के सौंदर्य को द्विगुणित कर रहे हैं।

महुआ झरे रस भरे में शब्दों का सौंदर्य देखते ही बनता है।

वेदना की अभिव्यक्ति...रात ढलती रही में....कम शब्दों में बहुत कुछ कह जाती हैं।

कैसे फिर कोई सृजन होगा.....यहाँ भी वेदना मुखर है पर अपनी गहनता में.... पर सृजन का मार्ग ढूँढती हुई।

नव वर्ष से जो सवाल करती हैं सुधा जी... वो हर जन के मन का सवाल है।

स्वाभिमान को झकझोरती हुई सुंदर रचना।

आपकी साधना की परिचायक ये रचनाएँ मन मोहती हैं, झकझोरती हैं और हम जैसों को बहुत कुछ सीखने का अवसर देती हैं।

यह साहित्य साधना अनवरत चलती रहे।

शुभकामनाएँ।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

4.आज रविवार सप्ताह का कवि विशेषांक में आदरणीया सुधा शर्मा जी आपके जीवन परिचय आत्मकथ्य को पढ़ा आपके साहित्यिक कर्म को हार्दिक नमन।

आपकी सभी रचनाएँ प्रेम माधुर्य एवं आत्मिक संतोष से परिपूरित है। जो पाठक को आल्हादित करने में समर्थ है।

1-मन को नेह गगन करुँगी में आपने मन आत्म प्राण में साँसों के बिना अलग संसार कहाँ उत्तम आत्माभिव्यंजना।

2-कपसीले बादल में आपने बड़ा ही मनोहारी मानवीकरण किया। उत्तम चित्र उपस्थित कर सुंदर प्रकृति सृंगार किया।

3-**महुआ झरे रस भरे** रचना में

प्रकृति की रूप छटा का भावपुरित चित्रांकन किया। लाजवाब शब्द संयोजन। मनभावन मनोहारी रचना।

4- **रात ढलती रही**

जिंदगी जीवन का अर्थ एवं रिश्तों के मुखोटे सच का उत्तम दार्शनिक रूप प्रस्तुत किया आपने जो हृदय को सहज की स्पर्श कर रही है।

5-**कैसे फिर कोई सृजन होगा**

सच घनीभूत पीढ़ा, टिस की आंधी
में कैसे सृजन होगा।

जब तक ललक का मन से आलिंगन होगा तभी सृजन होगा। उत्तम कविता एवं कवि मर्म को रेखांकित करती रचना।

6-**नववर्ष**

नए वर्ष से हजारों प्रश्न लिए रचना।

7-**स्वाभिमान**

संस्कृति के गौरव गान पर देश के स्वाभिमान पर देश व समाज के ठेकेदारों से सवाल करती उत्तम रचना।

आपकी सभी रचनाएँ उत्तम एवं भावपुरित है। जो सहज ही पाठक को सोचने विचरने पर मजबूर कर देती है। आपका शब्द संयोजन सटीक है जो रचना का स्पस्ट अर्थ प्रदान करने में सफल रहा है। आपकी कलम नित नव लेखन के नव आयाम घड़ते हुए सफलता के शिखरों को स्पर्श करती रहे इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ हार्दिक **बधाई** एवं शुभकामनाएं।

कैलाश मंडलोई 'कदंब',
खरगोन मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दी ग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (एक)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा
वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com